① अपना-अपना भाग्य

जैनेंद्र कुमार

कहानी का उद्देश्य

आज के युग में व्याप्त स्वार्थपरता, मनुष्यों की हृदयहीनता, संवेदनशून्यता तथा गरीबी का चित्रण करना कहानी का उद्देश्य रहा है। आज के लोगों में दयालुता तथा परोपकार जैसे मूल्यों का अभाव हो गया है जिसके कारण मजबूर तथा दयनीय स्थिति से जूझते व्यक्ति की सहायता करने के बजाय उसकी स्थिति को 'अपना-अपना भाग्य' बताकर हर कोई अपनी ज़िम्मेदारी से बचना चाहता है। अमीर लोग को दूसरों के दुःख-दर्द से कोई लेना-देना नहीं होता।

① नैनीताल की संध्या की विशेषताएँ

→ नैनीताल की संध्या रुई के रेशे जैसे धीरे-धीरे उतर रही थी। भाप के बादल सिरों को छू-छूकर बेरोक घूम रहे थे। हल्के प्रकाश और अँधियारी से रंगकर कभी वे नीले दिखते कभी सफ़ेद और फ़िर ज़रा लाल पड़ जाते जैसे खेलना चाह रहे हों।

② लेखक अपने मित्र के साथ कहाँ बैठा था? वह बोर क्यों हो रहा था और क्यों कुढ़ रहा था?

→ लेखक और उसका मित्र नैनीताल की एक सड़क के किनारे बेंच पर बैठे थे। दिन-भर निरुद्देश्य घूमने के बाद वह थक चुके थे। पंद्रह मिनट बेंच में बैठने के बाद भी उनके मित्र का उठने का कोई इरादा न था। जब लेखक उठना चाहा तो उनके मित्र ने हाथ पकड़कर जरा और बैठने के लिए ज़ोर दिए। उन्हें जरा भी बैठने का मन नहीं था। चुपचाप बैठे बैठे लेखक [बोर] और कुढ़ रहा था।

③ लेखक के मित्र को क्या दिखाई पड़ा? उसका परिचय दीजिए।

→ लेखक के मित्र को कुहरे की सफ़ेदी में कुछ ही हाथ दूर से एक काली-सी मूर्ति अपनी ओर आती दिखाई दी।

वह कोई दस-बारह बरस का लड़का था। सिर के बड़े-बड़े बाल खुजलाता नंगे पैर, नंगे सिर एक मैली-सी कमीज लटकाए न जाने कहाँ जा रहा था; कहाँ जाना चाहता था। वह गोरे रंग काया पर मैल से काला पड़ गया था। आँखें अच्छी, बड़ी पर सूनी थी मानो जैसे अभी से झुर्रियाँ रंग गया हो।

② ज़रा-सी उम्र में उसकी मौत से पहचान कैसे हो गई थी।

→ दस-बारह वर्षीय लड़का और उसका दोस्त गरीबी के कारण अपने पंद्रह कोस दूर गाँव से भाग कर नौकरी के लिए कैलाश शहर आया था। परंतु उसका बड़ा दोस्त मालिक द्वारा मारा गया ~~जाने के कारण ज़रा-सी उम्र में उसकी मृत्यु मौत से पहचान हो गई~~

11) बालक फिर आँखों से बोलकर चुप खड़ा रहा। आँखें मानो बोलती थी - 'यह भी कैसा मूर्ख प्रश्न है।'

1) किस प्रश्न को सुनकर बालक चुप खड़ा रहा? उसकी आँखों ने क्या कह दिया।

③→ बालक द्वारा अनेक प्रश्नों का उत्तर देने बाद भी जब लेखक के मित्र ने उस बालक से उसके रात में सोने का स्थान, और उन्ही कपड़ों में सोने के विषय में पूछा तो बालक चुप ही खड़ा रह गया। उसकी आँखें मानो यह कह रही थी यह भी कैसा मूर्ख प्रश्न है। दो वक्त का खाना नहीं और ये लोग कपड़ा के लिए पूछ रहे है।

→ अपने परिवार के बारे में बालक ने क्या बताया?

लड़के ने बताया कि उसके पंद्रह कोस दूर गाँव में और 2 माँ-बाप रहते है। उसके कई भाई-बहन है। गाँव में कोई काम नहीं है, खेती नहीं, माँ बाप भूखे रहते थे, इसलिए वह वहाँ से भाग आया है।

माँ रोती रहती थी

→ लेखक को बालक की किस बात पर अचरज हुआ।

• जब लड़के ने बताया उसका एक साथी भी गाँव से भाग आया था जो उससे बड़ा था जो मर गया ~~साहब के~~ मर गया। ज़रा-सी उम्र में उसकी ~~मौत से~~ मालिक हाथों मौत से पहचान हो गई। यह बात सुनकर लेखक को अचरज हुआ।

→ लेखक और उसका मित्र बालक को कहाँ ले गए और क्यों। वकील साहब का पहाड़ी बालकों के संबंध में क्या मत था

• लेखक और उसका मित्र बालक को लेकर अपने एक मित्र वकील के होटल में ले गए क्योंकि वकील को एक नौकर की आवश्यकता थी।

वकील साहब का पहाड़ी बच्चों के ~~स~~ संबंध में यह मत था कि ये पहाड़ी बच्चे बड़े शैतान होते है, बच्चे-बच्चे में अवगुण छिपे होते है। यदि इन्हें नौकर रखा जाए तो अगले ही दिन क्या-क्या लेकर चंपत हो जाए। (इसलिए नौकर के रूप में बालक को नहीं रखा)

iii) भयानक शीत है। उसके पास बहुत कम कपड़े है? यह संसार है यार। मैंने स्वार्थ की फिलासफी सुनाई।

क) लेखक के मित्र की उदासी कारण बताइए

• लेखक के मित्र उस पहाड़ी लड़के को उनके वकील दोस्त के पास नौकर रखवाना चाहते थे। जैसे उस बालक को खाने और रहने की जगह मिल जाए। परंतु ~~बा~~ वकील दोस्त पहाड़ी ~~लड़के~~ वालों पर विश्वास नहीं करते थे। ~~जैसे कारण लड़के को नौकरी नहीं~~ इसलिए उन्होंने उसे नौकर नहीं रखा लड़के को सहायता न कर सकने के कारण लेखक का मित्र उदास था

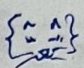

(२) 'यह संसार है यार' वाक्य का आशय क्या आजकल के मनुष्यों की किस प्रवृत्ति का द्योतक है।

• 'यह संसार है यार' वाक्य बताता है कि आज के लोगों में दया और मानवता की भावना शून्य होती जा रही है। दूसरों की मदद न कर यह कहना की ये तो उसका भाग्य है। अपनी जिम्मेदारी से बचना यही इस वाक्य का आशय है।

(३) अपना-अपना भाग्य कहानी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट करें।

• अपना-अपना भाग्य कहानी में लेखक ने यह व्यंग्य किया है की आज का मनुष्य समाज के प्रति जिम्मेदारीयों से भाग रहा है। वह स्वयं के लिए धन संचय करने में व्यस्त है। कहानी में दोनों बालकों की मृत्यु को समाज उनका भाग्य मानता है। लेकिन समाज यह मानने को तैयार नहीं कि दोनों के भाग्य में असमय मृत्यु नहीं लिखा था बल्कि एक साहब की मार से तो दूसरा समाज की निष्ठुरता से मर जाते है। किसी जरूरतमंद को मदद न करके उसके भाग्य पर दोष देना ही कहानी में निहित व्यंग्य है।

कहानी के [illegible] की यथार्थता पर प्रकाश

→ "स्वार्थ ! जो कहो, लाचारी कहो, निठुराई कहो - या बेहयाई ।"

① इसमें वक्ता कौन है । उसका चरित्र चित्रण किजीए

उ) इसमें वक्ता लेखक का मित्र है । जिस तरह कहानी में एक गरीब बालक की मददत करने की कोशीस की इसे पता चलता है कि लेखक मित्र अत्यन्त दयावान, परोपकारी, भावुक थे। और साथ ही प्रकृतिप्रेमी भी थे ।

→ मानो दुनिया की बेहयाई ढकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफेद और ठंडे कफन का प्रबंध कर दिया था

① उपर्युक्त अवतरण में किस की बात की जा रही है?

उ) एक दस-बारह वर्षीय पहाड़ी बालक की बात की जा रही है,

2) लड़के का मृत्यु का कारण क्या था.

उ) लड़का अपनी घर की गरीबी से तंग आकर काम की तलाश में नैनीताल भाग कर आया था। काम छूट जाने के कारण उसके पास रहने की जगह ~~और~~ ~~भी~~ नही थी। अत्याधिक ठंड में एक फटी कमीज पहन कर सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे रात बिताने को मजबूर हो गया। ~~जिसके कारण~~ ठंड लगने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

3) उपर्युक्त पंक्ति का आशय स्पष्ट किजीए

उ) प्रस्तुत पंक्ति ~~में~~ आशय जनमानस की संवेदन-शून्यता और स्वार्थ भावना से है। एक गरीब बालक ठंड से ठिठुरकर मर जाता है। परंतु उसकी मदद ~~कोई नहीं~~ किसी ने नहीं की निर्धन की सहायता करने की बजाय सब उसे अपना-अपना भाग्य का मान लेते है। परंतु प्रकृति ने उसके तन पर बर्फ की चादर बिछाकर मानो उसके लिए कफन का इंतजाम कर दिया। जिसे देखकर ऐसा लगता था मानो प्रकृति मनुष्य की बेहयाई ढँक रही हो ।